17 जुलाई 2007, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-४, बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

सब जीवों को उन्नति के समान अवसरों की उपलब्धि ही सर्वोदय है।

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-38

वर्ष : 30, अंक : 8 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जुलाई (द्वितीय), 2007 प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

बाल संस्कार शिविर एवं वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

उदयपुर (राज.): यहाँ दिनांक 10 से 17 जून तक श्री माहेश्वरी भवन में श्री दिग. जैन मुमुक्षु मण्डल एवं श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति उदयपुर द्वारा अष्टम बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का उदघाटन झण्डारोहण के माध्यम से श्री ताराचंदजी सेमारी द्वारा किया गया। इस अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा एवं पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

कक्षायें पण्डित कोमलचंदजी टड़ा, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित अरुणकुमारजी अलवर, पण्डित संजयजी शाह लोहारिया एवं डॉ. ममताजी बाँसवाड़ा के माध्यम से लीं गई।

ज्ञातव्य है कि उदयपुर द्वारा इस वर्ष को छहढाला वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है; अत: वहाँ सभी विद्वानों द्वारा छहढाला पर ही प्रवचन एवं कक्षायें ली गई।

शिविर के मध्य दिनांक 13 जून को छहढाला विषयक गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसका संचालन पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री ने किया। अंतिम दिन छहढाला पर आधारित संगीतमय नाटक की प्रस्तुति दी गई।

दिनांक 17 जून को श्री चंद्रप्रभ चैत्यालय, मुखर्जी चौक के द्वितीय तल पर नवनिर्मित वेदी में धवल पाषाणमय श्री सीमंधरस्वामी की 39 इन्च उत्तंग प्रतिमा को श्री विजयकुमारजी कमलकुमारजी बड़जात्या द्वारा वेदीप्रतिष्ठा पूर्वक विराजमान किया गया। साथ ही जिनमंदिर में आचार्यों के चरण एवं जिनवाणी की स्थापना भी की गई।

शिविर में विद्यमान 20 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

शिविर एवं विधान के समस्त कार्य प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र.अभिनन्दनजी खनियांधाना, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा एवं डॉ.महावीरप्रसादजी टोकर-उदयपुर के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

आयोजन में स्थानीय विद्वान पण्डित भोगीलालजी, पण्डित खेमचंदजी, पण्डित हेमन्तजी, पण्डित जिनेन्द्रजी एवं पण्डित प्रक्षालजी के अतिरिक्त श्री वसन्तभाई दोशी मुम्बई, श्री जवेरचन्दजी मुम्बई, श्री शांतिलालजी भीलवाडा, श्री महिपालजी बांसवाडा एवं चांदमलजी ललितकुमारजी लूणदा की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं शिक्षण शिविर सम्पन्न

बड़नगर (उज्जैन): यहाँ श्री दिगम्बर तेरापंथी बड़ा मंदिर, गाँधी चौक में श्री दिग. जैन मुमुक्षु मंडल बडनगर के तत्त्वावधान में दिनांक 10 से 17 जुलाई, 07 तक चि. आशीषकुमार अनिलकुमारजी पाटोदी परिवार द्वारा श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र.सुमतकुमारजी खनियांधाना, डॉ.उत्तमचंदजी जैन सिवनी, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया अलीगढ़, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

मंगलमय महोत्सव की सम्पूर्ण विधि ब्र.जतीशचन्द्रजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुनीलकुमारजी 'धवल' भोपाल, पण्डित सुबोधकुमारजी शास्त्री शाहगढ एवं पण्डित कान्तिकुमारजी इन्दौर ने सम्पन्न कराई।

इसी अवसर पर कुन्दकुन्द कहान संगीत सरिता द्वारा भक्ति-गीतों का आयोजन किया गया।

बाल-चेतना शिविर सम्पन्न

अजमेर(राज.): यहाँ श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 19 जून से 27 जून तक17 वें बाल व युवा चेतना शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा द्वारा प्रवचनसार व रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से युवा एवं प्रौढ़ कक्षा ली गई। साथ ही पं.अनुभव जैन व पं.वैभव जैन मंगलायतन ने पूजन व्यवहार सम्बन्धी सामान्य ज्ञान कराया।

शिविर में सी.डी प्रवचन, जिनेन्द्र भक्ति, कक्षाओं व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से लगभग150 शिविरार्थियों ने धर्मलाभ लिया। समापन के अवसर पर भव्य रैली निकाली गई।

अन्तिम दिन शिविरार्थियों की लिखित व मौखिक परीक्षा लेकर उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

अगस्त शिविर की पत्रिका

अगस्त शिविर की पत्रिका

सम्पादकीय -

समाधि और सल्लेखना

8

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

समाधिमरण साधकों के कुछ उदाहरण :ह्न

जिन्होंने अपने आत्मा को आत्मस्वरूप में ही स्थिर किया है ह्न ऐसे साधकों को शेर (सियार) फाड़ते रहे, तथापि वे श्रेष्ठ रत्नत्रय की साधना करते रहे, शिथिल नहीं हुए ह्न ऐसे ही कुछ धीरधारक सल्लेखना में सफल होनेवाले उपसर्गजयी मुनिराजों के प्रात: स्मरणीय उल्लेखनीय नाम इसप्रकार है ह्न

● नवदीक्षित सुकुमाल मुनि को स्यालनी और उसके बच्चों द्वारा लगातार तीन रात तक भक्षण किये जाने पर जिनके शरीर में घोर वेदना उत्पन्न हुई, फिर भी वे ध्यान द्वारा आराधना को प्राप्त हुए।

● उपसर्गजयी सुकौशल मुनि को उनकी माता ने शेरनी बनकर उनका भक्षण किया, तथापि वे उत्तम अर्थ को प्राप्त हुए।

● सिर पर अग्नि से तप्तायमान धधकती सिगड़ी जलने पर भी देहोत्सर्ग करके गजकुमार मुनि उत्तम अर्थ को प्राप्त हुए।

● एणिक पुत्र नामक साधु ने गंगा नदी के प्रवाह में बहते हुए भी निर्मोहरूप से चार आराधना प्राप्त करके समाधिमरण किया, परन्तु कायरता नहीं की; इसलिए हे कल्याण के अर्थी साधु! तुम्हें भी धैर्य धारण करके आत्महित में सावधान रहना उचित है।

● भद्रबाहु मुनिराज घोर क्षुधा-वेदना से पीड़ित होने पर भी संक्लेशरहित बुद्धि का अवलम्बन करते हुए, अल्पाहार नामक तप को धारण करके उत्तम स्थान को प्राप्त हुए, परन्तु भोजन की इच्छा नहीं की।

● कौशाम्बी नगरी में ललितघटादि बत्तीस प्रसिद्ध महामुनि, नदी के प्रवाह में डूबने पर भी निर्मोहरूप से प्रायोपगमन संन्यास को धारण करके आराधना को प्राप्त हुए।

● चम्पानगरी के बाहर गंगा के किनारे धर्मघोष नामक महामुनि एक मास का उपवास धारण करके असह्य तृषा की वेदना होने पर भी संक्लेशरहित उत्तम अर्थ को प्राप्त हुए, आराधनासहित समाधिमरण किया, तृषा की वेदना से पानी की इच्छा नहीं की, संयम से नहीं डिगे; बल्कि धैर्य धारण करके आत्मकल्याण किया।

● श्रीदत्त मुनि को पूर्वजन्म के वैरी देव ने विक्रिया से घोर शीत वेदना दी; तथापि वे संक्लेश किये बिना उत्तमस्थान को प्राप्त हुए।

● वृषभसेन नामक मुनि, उष्ण वायु, उष्ण शिलातल तथा सूर्य का तीव्र आतप संक्लेशरहित होकर सहन करके उत्तम अर्थ को प्राप्त हुए।

● रोहेडग नगरी में अग्निपुत्र नामक मुनि का क्रौंच नामक शत्रु ने शक्ति-आयुध द्वारा घात कर दिया, तथापि उस वेदना को समतापूर्वक सहन करके, वे उत्तम अर्थ को प्राप्त हुए।

● चण्डवेग नामक शत्रु ने काकंदी नगरी में अभयघोष मुनि के सर्व अंग छेद डाले; उस घोर वेदना को पाकर भी वे उत्तम अर्थस्वरूप अभेद रत्नत्रय को प्राप्त हुए।

● विद्युत्चर मुनि, डाँस-मच्छर द्वारा भक्षण की अतिघोर वेदना को संक्लेशरहित होकर सहन करके उत्तम अर्थरूप आत्मकल्याण को प्राप्त हुए।

● हस्तिनापुर के गुरुदत्त मुनि, द्रोणागिरि पर्वत पर, हण्डी के पकते अनाज की भाँति दग्ध होने पर भी उत्तम अर्थ को प्राप्त हुए।

● चिलातपुत्र नामक मुनि को किसी पूर्वभव के शत्रु ने तीक्ष्ण आयुध से घाव कर दिया, उस घाव में बड़े-बड़े कीड़े पड़ गये, कीड़ों से उनका शरीर चलनी की भाँति बिंध गया; तथापि वे समताभाव से वेदना सहन करके उत्तमार्थ को प्राप्त हुए।

● यमुनावक्र के तीक्ष्ण बाणों द्वारा जिनका शरीर छिद गया है ह्न ऐसे दण्ड मुनिराज, घोर वेदना को भी समभाव से सहन करके उत्तमार्थरूप आराधना को प्राप्त हुए।

● कुम्भकार नगरी में कोल्हू में पिलने पर भी अभिनन्दनादि पाँच सौ मुनि समभावपूर्वक आराधना को प्राप्त हुए।

● सुबन्धु नामक शत्रु ने गौशाला में आग लगा दी; उसमें जलने पर भी चाणक्य मुनिराज, प्रायोपगमन संन्यास धारण करके संक्लेशरहित उत्तम अर्थ को प्राप्त हुए।

इसप्रकार उपसर्गादि वेदना प्रसंग आने पर भी आराधना में अडिग रहनेवाले अनेक शूरवीर मुनिवरों का स्मरण किया है।

सभी भव्य जीव ऐसे मंगलमय समाधिमरण को धारण कर अपने जीवन में की गई आत्मा की आराधना तथा धर्म की साधना को सफल करते हुए सुगति प्राप्त कर सकते हैं।

उपसंहार

सारांश रूप में कहें तो आधि, व्याधि और उपाधि से रहित आत्मा के निर्मल परिणामों का नाम समाधि है। आधि अर्थात् मानसिक चिन्ता, व्याधि अर्थात् शारीरिक रोग और उपाधि अर्थात् पर के कर्तृत्व का बोझ ह्न समाधि इन तीनों से रहित आत्मा की वह निर्मल परिणति है, जिसमें न कोई चिन्ता है, न रोग है और न पर के कर्तृत्व का भार ही है। एकदम निराकुल, परम शांत, अत्यन्त निर्भय और निशंक भाव से जीवन जीने की कला ही समाधि है। यह समाधि संवेग के बिना संभव नहीं और संवेग अर्थात् संसार से उदासी सम्यग्दर्शन के बिना संभव नहीं। सम्यग्दर्शन के लिए तत्त्वाभ्यास और भेदविज्ञान अनिवार्य है।

जिसे समाधि द्वारा सुखद जीवन जीना आता है, वही व्यक्ति सल्लेखना द्वारा मृत्यु को महोत्सव बनाकर शान्तिपूर्वक मरण का वरण कर सकता है।

समाधि और सल्लेखना को और भी सरल शब्दों में परिभाषित करें तो हम यह कह सकते हैं कि ''समाधि समता भाव से सुख-शान्तिपूर्वक जीवन जीने की कला है और सल्लेखना मृत्यु को महोत्सव बनाने का क्रान्तिकारी कदम है, मानव जीवन को सार्थक और सफल करने का एक अनोखा अभियान है।'' इति शुभं। ॐ नमः। ●

तत्त्वचर्चा

छहढाला का सार 11

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे)

सात तत्त्व और देव, गुरु, धर्म के श्रद्धानरूप व्यवहार सम्यग्दर्शन का निरूपण करने के उपरान्त विषयवस्तु को समेटते हुये वे कहते हैं कि ह्न

वसु मद टारि निवारि त्रिशठता, षट् अनायतन त्यागो।
शंकादिक वसु दोष बिना, संवेगादिक चित पागो।।
अष्ट अंग अरु दोष पचीसौं, तिन संक्षेपहु कहिये।
बिन जाने तैं दोष–गुनन को, कैसे तजिये गहिये।।

आठ मदों को टालकर, तीन मूढ़ताओं का निवारण करके छह अनायतनों को त्याग दो और शंकादि आठ दोषों से रहित होते हुये प्रशम, संवेग, आस्तिक्य और अनुकंपा आदि सद्गुणों में चित्त लगाओ; क्योंकि जबतक गुणों और दोषों को पहिचानेंगे नहीं, तबतक गुणों को ग्रहण करना और दोषों को छोड़ना संभव नहीं है; अत: अब संक्षेप में आठ अंगों और पच्चीस दोषों का वर्णन करते हैं। महाकवि तुलसीदासजी भी रामचरितमानस में लिखते हैं ह्न **संग्रह–त्याग न विनु पहिचाने**

बिना पहिचान के किसी भी वस्तु का ग्रहण करना और त्याग करना संभव नहीं है।

अब नि:शंकादि अंगों (गुणों) और शंकादि दोषों की चर्चा करते हैं; जो इसप्रकार है ह्न

जिन–वच में शंका न धार, वृष भव सुख–वांछा भानै।
मुनि–तन मलिन न देख घिनावै, तत्त्व–कुतत्त्व पिछानै।।
निज–गुण अरु पर–औगुण ढाँकै, वा निज धर्म बढ़ावै।
कामादिक कर वृष तैं चिगते, निज–पर को सु दिढ़ावै।।
धर्मी सौं गो–वच्छ प्रीति सम, कर निज धर्म दिपावै।
इन गुन तैं विपरीत दोष वसु, तिनको सतत खिपावै।।

जिनेन्द्र भगवान के वचनों में शंका नहीं रखना नि:शंकित अंग है; धर्म से सांसारिक सुखों की इच्छा नहीं करना नि:कांक्षित अंग है; अस्नानव्रती मुनिराजों के मलिन तन को देखकर घृणा नहीं करना निर्विचिकित्सा अंग है; तत्त्व और कुतत्त्वों की पहिचान करना अमूढ़दृष्टि अंग है; अपने गुणों और दूसरे के दोषों को प्रगट नहीं करना उपगूहन अंग है और इस उपगूहन अंग को धर्म की वृद्धि का कारण होने से उपबृंहण अंग भी कहते हैं।

स्वयं या कोई अन्य व्यक्ति कामादिक के कारण धर्म से चिग रहा हो तो स्वयं को या उसे धर्म में स्थिर कर देना, दृढ़ कर देना स्थितिकरण अंग है। जिसप्रकार बिना किसी स्वार्थ के गाय बछड़े से वात्सल्यभाव रखती है; उसीप्रकार साधर्मी भाई–बहनों से वात्सल्यभाव रखना वात्सल्य अंग है और अपने धर्म की प्रभावना करना प्रभावना अंग है।

इन आठ अंगों को धारण करना और इनसे विपरीत शंका, कांक्षा आदि आठ दोषों से निरन्तर दूर रहना सम्यग्दृष्टियों का कर्त्तव्य है।

पच्चीस दोषों में से अब आठ मदों की चर्चा करते हैं ह्न

पिता भूप वा मातुल नृप जो, होय न तौ मद ठानै।
मद न रूप कौ मद न ज्ञान कौ, धन–बल कौ मद भानै।।
तप को मद न मद जु प्रभुता कौ, करै न सो निज जाने।
मद धारै तो यही दोष वसु, समकित को मल ठानै।।

पिता या मामा राजा हो तो भी इस बात का अभिमान नहीं करना चाहिये। इसीप्रकार सुन्दरता का, क्षयोपशम ज्ञान का, धन का,बल का, तप का और प्रभुता का मद जो नहीं करता, वह आत्मा को जानता है, आत्मानुभव करता है। यदि उक्त आठ मदों को धारण करे तो ये आठ दोष सम्यग्दर्शन में मल पैदा करते हैं।

प्रश्न : पिता राजा हो तो कुलमद है। मामा राजा हो तो जातिमद ह्न यह बात कुछ ठीक नहीं लगती; क्योंकि यदि ऐसा है तो फिर कुलमद तो अकेले राजा के बेटे को और जातिमद राजा के भानजे को ही होगा; परन्तु अन्य मिथ्यादृष्टियों को भी तो कुलमद–जातिमद हो सकते हैं, होते ही हैं।

उत्तर : वस्तुत: बात यह है कि पिता नियम से हमारे कुल का ही होता है और मामा नियम से हमारे कुल का नहीं हो सकता; क्योंकि अपने कुल में, अपने गोत्र में शादियाँ नहीं होती।

जिसप्रकार एक ही कुल के लड़के–लड़की में परस्पर शादी नहीं होती; उसीप्रकार पुराने जमाने में जाति के बाहर भी शादियाँ नहीं होती थीं। अत: यहाँ पिता शब्द कुल का सूचक है और मामा शब्द जाति का सूचक है। इसप्रकार यहाँ पर कुलमद को पिता से और जातिमद को मामा के बड़प्पन से जोड़ा गया है।

वस्तुत: बात यह है कि 'मैं ऊँचे कुल का हूँ, मैं ऊँची जाति का हूँ' ह्न ऐसा मानकर अभिमान करना या 'मैं नीचे कुल का हूँ, मैं नीची जाति का हूँ' ह्न ऐसा मानकर दीनता लाना कुलमद और जातिमद हैं।

कुलमद और जातिमद के लिये किसी राजा का बेटा–भानजा होना जरूरी नहीं है। यहाँ राजा शब्द को प्रतीक के रूप में ही लिया गया है।

अब तीन मूढ़ता और छह अनायतन की बात करते हैं ह्न

कुगुरु कुदेव कुवृष सेवक की, नाहिं प्रशंस उचरै हैं।
जिन मुनि जिन श्रुत बिन, कुगुरादिक तिन्हैं न नमन करै हैं।।

कुदेव, कुगुरु, कुधर्म और इनके सेवकों अर्थात् कुदेवसेवक, कुगुरुसेवक और कुधर्मसेवक ह्न इन छहों की न तो मन से प्रशंसा करते हैं और न वचन से स्तुति करते हैं; क्योंकि ये छह अनायतन हैं, धर्म के आयतन (घर) नहीं हैं। ज्ञानीजन उक्त छह अनायतनों से दूर रहते हैं।

जिनेन्द्रदेव, जिनवाणी और जैनगुरुओं के अतिरिक्त कुगुरु आदि को नमस्कार नहीं करते। ज्ञानी जीवों का यह तीन मूढ़ताओं का त्याग है। **(क्रमश:)**

अगस्त शिविर की पत्रिका

अगस्त शिविर की पत्रिका

१७ जुलाई २००७, मूल्य : २/- आर. एन. आई. ३११०९/७७ RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

छात्रवृत्तियाँ वर्ष : 2007-2008

भारत में मान्यता प्राप्त स्कूलों/कॉलेजों/प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों के लिये योग्यता तथा कमजोर आर्थिक स्थिति के आधार पर चुने हुए छात्रों को दो श्रेणियों में छात्रवृत्तियाँ प्रतिवर्ष उपलब्ध कराई जाती हैं ह्न

(क) नॉन-रिफन्डेबल (वापिस न होने वाली) छात्रवृत्ति : नॉन-तकनीकी-उच्चतर माध्यमिक, स्नातक व स्नातकोत्तर आदि शिक्षा के लिये 100/- रूपये से 300/- रूपये मासिक तक छात्रवृत्ति दी जाती है। जिन छात्रों को गत वर्ष छात्रवृत्ति दी गई थी, यदि वे इस वर्ष भी छात्रवृत्ति चाहते हैं तो पुन: आवेदन कर सकते हैं।

(ख) रिफंडेबल (वापिस चुकाई जाने वाली)ब्याज मुक्त ऋण के रूप में छात्रवृत्ति: तकनीकी इन्जीनियरिंग, कम्प्यूटर, मैडिकल, बिजनिस मैनेजमेंट व जैन दर्शन में अनुसंधान आदि पाठयक्रमों में उच्च शिक्षा के लिये 500 रूपये से 1000 रूपये मासिक तक छात्रवृत्ति दी जायेगी।

निर्धारित आवेदन-पत्र एक लिफाफे (9''ह्न4'') पर स्वयं का पता लिख कर और पाँच रूपये का डाक टिकट लगाकर भेजने से ही प्राप्त हो सकता है। पूरे विवरण सहित आवेदन पत्र कार्यालय में पहुँचने की अंतिम तिथि 31 अगस्त 2007 है। मंत्री(छात्रवृत्ति) जैन सोशल वेलफैयर एसोसिएशन, ई-9, ग्रीनपार्क एक्सटेन्शन, नई दिल्ली-110016

धर्म प्रभावना

चन्देरी (म.प्र.) : यहाँ श्री चौबीसी दि.जैन बड़ा मन्दिर में दिनांक 9 जून से 12 जून तक महिला मण्डल के विशेष आग्रह पर पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर के प्रात: व रात्रि में दोनों समय समयसार ग्रन्थाधिराज के निर्जरा अधिकार पर सारगर्भित प्रवचन हुए।

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट-एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

शिविर सम्पन्न

कोटा (राज.): यहाँ श्री दिगम्बर जैन बाल विकास पारमार्थिक न्यास कोटा के तत्त्वावधान में15 वाँ जैन दर्शन एवं व्यक्तित्व विकास शिविर 11 से 15 जून तक आयोजित किया गया। शिविर का उद्घाटन आदरणीय बाबू जुगल किशोरजी'युगल' के सानिध्य में श्री सुरेन्द्रकुमार जैन (राहुल ट्रांसफार्मर) ने किया।

शिविर में पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर व पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। श्रुतपंचमी के अवसर पर बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के प्रासंगिक प्रवचन का लाभ भी उपस्थित जन समुदाय को मिला।

इस अवसर पर पण्डित सचिनजी शास्त्री एवं पण्डित निकलंकजी शास्त्री द्वारा अमितजी, समकितजी, समीरजी एवं विरागजी के सहयोग से बाल कक्षायें ली गई। शिशुवर्ग की विशेष कक्षायें ब्र. नीलिमाजी, श्रीमती संगीताजी, श्रीमती अलकाजी व कु.श्रुति जैन ने ली।

शिविर में लगभग 450 शिविरार्थियों ने लाभ लिया।

साधना चैनल पर
डॉ. भारिल्ल के प्रवचन

अब प्रात: 6.20 से 6.40 बजे तक

देखना एवं सुनना न भूलें। इसकी सूचना मन्दिरजी में देवें और मित्रों को भी बता दें।

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.

प्रबन्ध सम्पादक : **पं.संजीवकुमार गोधा**,डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट, एम.फिल एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी**, साहित्याचार्य

प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -

ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)

फोन : (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८

फैक्स : (०१४१) २७०४१२७